Dr. Nutissri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
U. G V Sem (2023-2027)
MJC - 08 : Philosophy of Religion

'Immortality of Soul'
(आत्मा की अमरता)-

बौद्ध एवं चार्वाक को छोड़कर प्रायः सभी भारतीय दर्शनों, उपनिषदों, भगवद्गीता, स्मृतियों, पुराणों और धर्मशास्त्रों में आत्मा की अमरता को स्वीकार किया गया है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म के अधिकतर अनुयायी आत्मा की अमरता में दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं। अनेक कथाओं के माध्यम से उपनिषद के ऋषियों ने यह स्पष्ट किया है कि आत्मा मन, शरीर, बुद्धि तथा प्राण से सम्बन्धित होते हुए भी इन सबसे भिन्न और स्वतन्त्र है। यह अभौतिक सत्ता है जो शरीर मन आदि के नष्ट हो जाने पर भी बनी रहती है। अतः इसे अविनाशी और अजर-अमर कहा गया है। यह आत्मा सभी प्राणियों में व्याप्त है। जिसके कारण यह शाश्वत अथवा नित्य है क्योंकि न तो इसका आदि है न तो अन्त।

आत्मा के अमरत्व का अर्थ है "मृत्यु के बाद भी आत्मा का विनाश न होना"। दूसरे शब्दों में अविच्छिन्न रूप से कालचक्र में आत्मा का स्थायित्व बना रहना ही अमरता है। ईश्वरवादी दृष्टिकोण से आत्मा को सर्वकालीन माना जाता है। चूँकि ईश्वर सर्वकालीन होता है अतः भक्त भी सर्वकालीन बने रहने की भावना रखता है।

आत्मा सम्बन्धी उपनिषदों के विचार को गीता के विशुद्ध रूप से वर्णित किया गया है। महाभारत के युद्ध से पूर्व मोहभ्रान्त अर्जुन को उसकी आशंका का निराकरण करने के लिए कृष्ण ने इसी आत्मा के स्वरूप और अमरता का ज्ञान कराया। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं -

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वाऽभविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

अर्थात् आत्मा अजन्मा शाश्वत नित्य तथा सनातन है शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी इसका विनाश नहीं होता।

पुनश्च कृष्ण कहते हैं—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

अर्थात् शस्त्र इसे काट नहीं सकता, अग्नि इसे जला नहीं सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

पुनश्च कृष्ण कहते हैं—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार वह आत्मा भी जीर्ण शरीर का परित्याग करके नवीन शरीर ग्रहण करता है।

आत्मा की अमरता

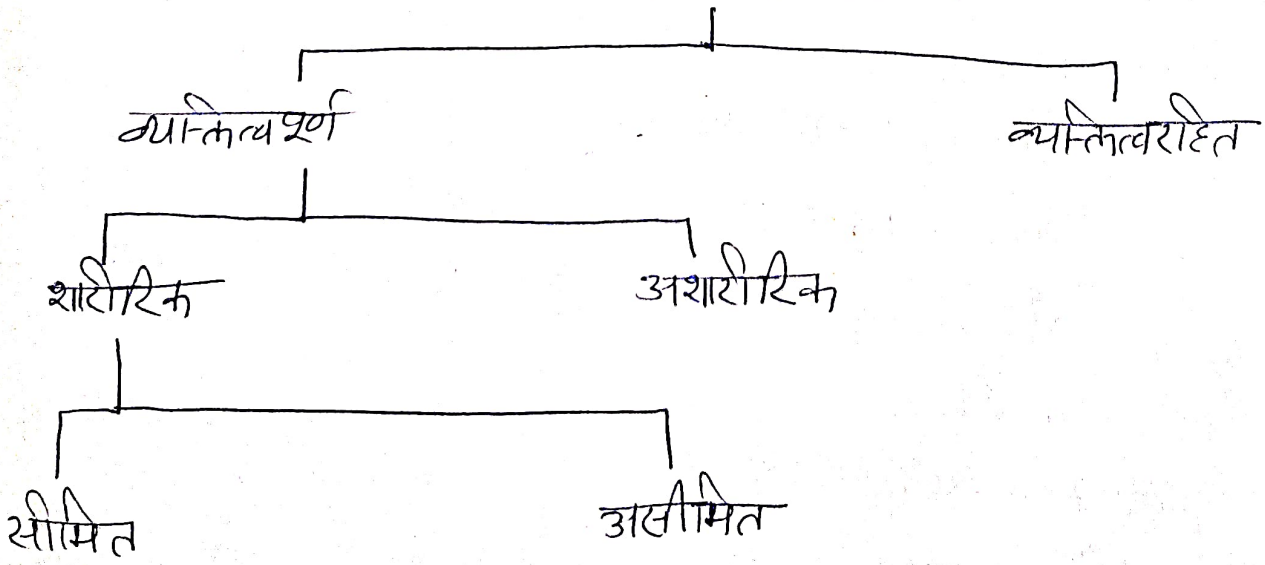

अमरत्व की भावना प्राचीनकाल से चली आ रही है। मनुष्य अपने इस लघु जीवन से सन्तुष्ट नहीं हो पाता। मृत्यु का भय सदा उसके सिर पर मंडराता रहता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी कार्य धैर्य और शान्ति के साथ नहीं कर पाता है। इसलिए वह एक ऐसे जीवन की कल्पना करता है जो मृत्यु के बाद भी रहता है।

इसी प्रकार अमरत्व की भावना अत्यन्त विकसित धर्मों में भी पायी जाती है। जे. एच. ब्यूबा ने यह सिद्ध किया है कि ईश्वर में विश्वास करने वालों की अपेक्षा आत्मा के अमरत्व में विश्वास करने वालों की संख्या अधिक है। अतः स्पष्ट है कि कुछ अनीश्वरवादी भी अमरत्व में विश्वास रखते हैं। विश्व में आज भी आत्मा की अमरता में विश्वास रखने वाले अधिकतर लोग ईसाई धर्म और हिन्दू धर्म के मानने वाले हैं।

विभिन्न विचारकों ने आत्मा के अमरत्व को सिद्ध करने के लिए अनेक तर्कों का सहारा लिया है। इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित तर्क उल्लेखनीय है।—

(1) मानव का बौद्धिक जीवन आत्मा की अमरता का ज्वलन्त प्रमाण है। कल्पना और स्मृति में आत्मा देश-काल की सीमा का त्याग कर भौतिक वातावरण से मुक्त होकर भविष्य और भूतकाल में विचरण करने लगती है। इससे पुष्ट होता है कि आत्मा शरीर से स्वतन्त्र होकर अपना अस्तित्व रख सकती है तथा जन्म के पूर्व एवं मृत्यु के बाद भी भौतिक आधार के बिना अपनी सत्ता कायम रख सकती है।

(2) आत्मा एक ऐसी सत्ता है जो भौतिक वस्तुओं का निर्देशन करती है। किन्तु यदि आत्मा की अमरता को नहीं माना जाए

तो यह मानना भी अनुचित होगा कि वह भौतिक वस्तुओं का निर्देशन करती है। आत्मा भौतिकपदार्थों का निर्देशन करती है, यह निर्विवाद सत्य है। अतः आत्मा को अमरत्व प्रमाणित हो जाती है।

(3) प्लेटो ने आत्मा को सरल द्रव्य माना है। सरल द्रव्य निरवयव होता है। निरवयव होने के नाते वह वह अविभाज्य है। अविभाज्य पदार्थों का नाश नहीं होता (क्योंकि नाश का अर्थ है वस्तुओं के विभिन्न अंगों का पृथक हो जाना) अतः आत्मा अविनाशी है।

(4) डेकार्ट ने भी आत्मा को द्रव्य कहा है जिसका आधार चैतन्य है। किसी भी द्रव्य का विनाश सम्भव नहीं है क्योंकि द्रव्य एक शक्ति है जो अविनाशी है। इसीलिए आत्मा भी अविनाशी अथवा अमर है।

(5) लाइबनीज ने भी आत्मा को अमर बतलाया है। उनके अनुसार चिदबिन्दु परम तत्व है। चूँकि चिदणु अनेक है। सबसे अविकसित चिदणु जड़ है। इससे विकसित आत्मरूपी चिदबिन्दु है। जबकि ईश्वररूपी चिद-बिन्दु सर्वाधिक विकसित एवं पूर्ण है। जड़ चिदबिन्दु से लेकर ईश्वर चिदबिन्दु तक तारतम्यात्मक एवं अटूट शृंखला पायी जाती है। इन चिदबिन्दुओं के मध्य कोई खाई नहीं है। यदि चिदबिन्दु को नश्वर मान लिया जाय तो यह शृंखला टूट जाती है साथ ही लाइबनीज का सिद्धान्त असिद्ध हो जाता है। लाइबनीज इस चिदबिन्दु को अमर मानते हैं इसीलिए आत्मा भी चिदबिन्दु होने के कारण अमर है।

(6) विश्व में अनेक मूल्य है जिसका प्रकाशन मानव को माध्यम बनाकर अच्छे कर्मों के द्वारा किया होता है। मूल्यों का निरन्तर प्रकाशन अत्यावश्यक है। अतः इसके लिए प्रकाशन का आधार मानव को भी अमर होना आवश्यक है।

(7) कान्त ने नैतिक युक्तियों के आधार पर अमरत्व के आधार पर अमरत्व प्रमाणित किया है। आत्मा की अमरता उनके अनुसार नैतिकता की एक पूर्वमान्यता है। परम शुभ की प्राप्ति नैतिक जीवन का परम लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति इस छोटे से जीवन में सम्भव नहीं है। इसके लिए मनुष्य को बार-2 जन्म लेना पड़ता है। इसका अर्थ है आत्मा को बार-2 पुरातन शरीर त्याग कर नवीन शरीर धारण करता है।

(8) कर्म सिद्धान्त भी आत्मा को अमर सिद्ध करता है। चूंकि इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है। प्राय: ऐसा देखा जाता है कि वर्तमान जीवन में शुभ करने वाला दुःख तथा पाप करने वाला सुख भोग रहा है। ऐसी स्थिति में यह मानना पड़ता है कि शुभकर्ता का दुःख भूत जीवन का परिणाम है तथा उसके इस जीवन के शुभ कृत्य उसे भविष्य जीवन में शुभ परिणाम देंगे। अत: कृतप्रणाश तथा अकृताभ्युगम की स्थिति आत्मा की अमरता को परम आवश्यक मानती है।

(9) आज के वैज्ञानिक युग में मनोविज्ञान तथा परामनोविज्ञान ने विधिवत ढंग से अमरत्व के सिद्धान्त का समर्थन किया है। परामनोविज्ञान में विशिष्ट उपाय के द्वारा मृत व्यक्ति की आत्मा से बातचीत की जाती है। छोटे-2 बालक पूर्वजन्म की बातें सुनाते हैं। जिनकी सत्यता परीक्षा के द्वारा होती है। डॉ० स्टीवेन्सन ने अपनी पुस्तक 'Case of the incarnation' के द्वारा पुनर्जन्म के सिद्धान्त को वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित किया है। जिससे अमरत्व को बल मिलता है।

(10) 'शक्ति का अनश्वरता नियम' भी आत्मा की अमरता का प्रमाण है। इस सिद्धान्त के अनुसार शक्ति ज्यों कि त्यों बनी रहती है। आत्मा भी एक प्रकार की आध्यात्मिक शक्ति है अतः यह भी शाश्वत है।

(11) विलियम जेम्स के अनुसार आत्मा की अमरता में विश्वास करने की भावना पायी जाती है। इसीलिए भावनाओं की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः भावना के आधार पर भी आत्मा की अमरता सिद्ध होती है।

समीक्षा

भारतीय दर्शन में भी आत्मा की अमरता का जोरदार समर्थन किया गया है जैसे वेद, उपनिषद, गीता एवं षडदर्शन सभी अमरत्व की भावना से ओत-प्रोत हैं। चार्वाकेतर भारतीय दर्शन आत्मा को चिरन्तन अपरिवर्तनशील एवं विकास रहित मानते हैं। चूँकि आत्मा नित्य, शाश्वत, एवं अविनाशी है जिसके कारण ही मोक्ष का विचार सार्थक होता है। आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विचारक जैसे टैगोर, विवेकानन्द, अरविन्द, राधाकृष्णन, गाँधी इत्यादि भी आत्मा की अमरता को अपने-2 ढंग से प्रमाणित करते हैं।

वस्तुतः आत्मा की अमरता युक्तियों एवं तर्कों के आधार पर सिद्ध करने की वस्तु नहीं है। जिस प्रकार ईश्वर का अस्तित्व तर्क-वितर्क की वस्तु न होकर विश्वास एवं श्रद्धा का विषय है ठीक उसी प्रकार आत्मा की अमरता भी विश्वास पर आधारित है। कान्ट के अनुसार आत्मा की अमरता का सिद्धान्त नैतिक और धार्मिक जीवन के आधार स्तम्भ हैं। किन्तु यह श्रद्धा और विश्वास के विषय हैं तर्क और बुद्धि के नहीं। कान्ट ने कहा है कि 'श्रद्धा को लाने के लिए मुझे प्रज्ञा को समाप्त करना पड़ा। जिसे बुद्धि सिद्ध

नहीं कर सकती उसे श्रद्धा सिद्ध कर सकती है।'

अमरत्व के विरुद्ध युक्तियाँ

अमरत्व के विरुद्ध में पहली युक्ति प्रदान करते हुए कहा जाता है कि जिसका प्रत्यक्षीकरण हो सके वही वास्तव है। अमरत्व का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता। इसलिए वह वास्तव नहीं कही जा सकती। पर जब हम इस युक्ति पर आलोचनात्मक दृष्टि दौड़ाते हैं तब हम कह सकते हैं कि ज्ञान का साधन केवल प्रत्यक्ष ही नहीं बल्कि आत्मानुभूति और अनुमान भी ज्ञान का साधन है। यदि ज्ञान का साधन केवल प्रत्यक्ष होता तब यह बात सही मानी जा सकती थी, & अतः यह युक्ति निराधार है।

अमरता की भावना को निराधार साबित करते हुए कुछ लोगों ने कहा है कि यह भावना मिथ्या है। क्योंकि यह एक स्वार्थपूर्ण भावना है। मानव स्वार्थ के वशीभूत होकर अमर होना चाहता है। परन्तु इसके विरुद्ध में कहा जा सकता है कि मानव की समस्त भावनाएँ स्वार्थ पर आधारित नहीं हैं। अधिकतर परार्थवादियों को देखा जाता है कि वे समस्त मानव की अमरता का विचार करते हैं।

कुछ लोगों ने प्रकृतिक नियम — जिसकी शुरुआत होती है उसका अन्त भी होता है — के आधार पर आत्मा की अमरता का खण्डन करना चाहा है। इनके अनुसार आत्मा का अन्त आवश्यक है क्योंकि इसकी शुरुआत होती है। परन्तु यह आक्षेप उचित नहीं जँचता है। आत्मा शाश्वत सत्ता होने के कारण जन्म-मरण से परे है। फिर यह नियम जिसका आरम्भ होता है उसका अन्त भी होता है, कोई सार्वभौम नियम नहीं है। यह नियम केवल भौतिक गति के लिए ही सत्य होता है। पर यह नियम गणित में लागू नहीं किया

जा सकता। आत्मा तो आदि और अन्त से परे है।

कुछ लोगों ने आत्मा की अमरता का खण्डन करते हुए कहा है कि यदि सभी आत्माएँ अमर हों तो विश्व में उन्हें रहने का स्थान ही नहीं मिलेगा। इसलिए आत्मा को अमर नहीं होना चाहिए जिससे विश्व में स्थानाभाव न हो। परन्तु यह आक्षेप उचित नहीं है क्योंकि आत्मा देश (space) को नहीं घेरती है। आत्मा एक आध्यात्म सत्ता है जो काल और दिक से परे है। जिस प्रकार मस्तिष्क में अनेकों विचार रह सकते हैं उसी प्रकार विश्व में भी अनेक आत्माओं का निवास हो सकता है। इससे यह सिद्ध होता है कि आत्मा अमर है।

कुछ वैज्ञानिकों ने भी अमरता की भावना में अविश्वास किया है। उनका कहना है कि आत्मा को अमर नहीं कहा जा सकता। पर वैज्ञानिकों का यह विचार निराधार है। जिन विषयों पर वैज्ञानिक अन्वेषण नहीं कर सकते उन पर उनका प्रस्तावित विचार प्रमाणिक नहीं माना जा सकता। भौतिकशास्त्र के जानने वाले वैज्ञानिक अगर मनोविज्ञान पर कुछ निर्णय करते हैं तो उनका विचार बिना मूल्यांकन किये सत्य नहीं माना जा सकता। वैज्ञानिक धर्म-दर्शन की समस्याओं पर विचार प्रकट करने में योग्य नहीं माने जा सकते।

इस प्रकार अमरत्व के विरुद्ध जितने भी तर्क दिये गये हैं वे असंगत हैं। अमरता की भावना सभी लोगों में पायी जाती है। यह एक विश्वव्यापी भावना है। यह प्रत्येक धर्म का आधार है। इसलिए जब तक धर्म का अस्तित्व होगा अमरत्व की भावना का मूल्य कम नहीं होगा। अतः मानव के धार्मिक विचार में अमरत्व की भावना से अत्यधिक सहायता मिली है। ज्यों-ज्यों धर्म का विकास होता गया है त्यों-त्यों अमरत्व की भावना की पक्का बढ़ती गयी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब तक मानव का धर्म में विश्वास रहेगा अमरत्व की भावना निःसंदेह रूप से जीवित रहेगी।